1

(524)

दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	Khetdan charan	Subject/Code:	Essay - 06
UPSC Roll No:	1142049	Date:	
Drishti Id:	—	E-mail Id:	
Centre:	524	Medium:	HINDI

Test Code: Essay-06

Time allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

(To be filled by Evaluator only)

	Max. Marks	Marks Obtained
	(Essay Topic No.)	(Marks)
Section-A		
Section-B		
Total		

Overall Feedback

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only

Time Taken	Start Time:	End Time:	Student Signature	
Mode of Examination	Online	Offline		

For Office Use Only

Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	**मापदण्ड/Parameters**	**Max. Marks**	**Section-A (Essay-1)**	**Section-B (Essay-2)**
1.	**परिचयः** विषय और संलग्नता की स्पष्टता। **Introduction:** Clarity of theme and engagement.	10		
2.	**विषय वस्तुः** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठनः** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकताः** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्तिः** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्षः** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकताः** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुलः Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject of the essay** to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षाः**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: (125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic: टूटे हुए इंसानो की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चे बनाना आसान है।"

निबंध :-

"व्यक्ति को तीर जब कारी लगे
उसे कैसे न दुनिया भारी लगे
× × × ×
वली कहे तू अगर एक वचन
रकिबों के दिल में कटारी लगे ||"

वली दक्कनी की उपर्युक्त गजल एक टूटे हुए इंसान की इस मनोवृति को स्पष्ट करता है कि व्यक्ति जीवन के चाहे किसी भी क्षेत्र जैसे प्रेम, कैरियर, ध्यान, इत्यादी में एक-दो बार हार जाता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है तो वह किस प्रकार नकारात्मक मनोवृत्ति से भर जाता है जिससे पुन: उठने व पुन: प्रयास करने की भावना ही समाप्त हो जाती है। समयानुरूप यही भावना उनको इतना घेरने लग जाती है कि उसको प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु, स्थान उसको रकिब (शत्रु, विरोधी) लगने लगता है।

वही दूसरी ओर एक अन्य प्रस्तुत कहानी है कि " जंगल मे खेलते हुए बच्चे (कोरे कागज) को चाणक्य कुछ राशि से खरीद कर ले जाते है तथा उस कोरे कागज पर अपनी समस्त कूटनीतिक, प्रशासनिक राजनीतिक, रणनीतिक तथा युद्ध नीति को लिखने व आकार देने का प्रयास करते है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तथा इस कोरे कागज रूपी नवीन बच्चे को इस प्रकार तैयार करते है कि वह भविष्य का सम्राट तथा युग निर्माता बनता है जिसे चन्द्रगुप्त नाम से पहचाना गया। इस प्रकार चाणक्य ने एक बच्चे को मजबूत बनाना आसान समझा।

सामान्यतः यह माना जाता है कि नवीन/बच्चा पूर्णतः शून्य पूर्वाग्रहों तथा भावनाओं से युक्त होता है। वह बिल्कुल एक बीज की भाँति होता है उसे बोने के पश्चात जिस प्रकार सींचा जाएगा उसी प्रकार उसकी वृद्धि होगी इसलिए उनके निर्माण ~~के~~ आसानी से तथा आवश्यकता अनुरूप किया जा सकता है। इसी के दुसरी तरफ ~~एक~~ जब किसी व्यक्ति मे

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बड़ी बिमारी होने पर दर्ददायी शल्य चिकित्सा कि जरूरत पड़ती है उसी प्रकार किसी टूटे हुए इंसान की मरम्मत करने के लिए विशेष दर्ददायी शल्य चिकित्सा की जरूरत महसूस होती है।

यदि पूर्वोदाहरणों पर एक नजर डालें तो जब आदिकाल मे मनुष्य का जीवन कबीलाई स्वरूप मे था तब व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए सामाजिक अनुबंध सिद्धान्त के अनुरूप राज्य का निर्माण करते है लेकिन समय के साथ-साथ राज्य कब भस्मासुर बन गया इसका पता ही नही चला। इसी के साथ-2 मनुष्य स्वयं से तथा राज्य से टूट गया व राजतंत्र, अल्पतंत्र, एकतंत्र जैसे राज्यों का विकास हुआ। लेकिन जब इन टूटे हुए इंसानो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

की मरम्मत करने का प्रयास किया जाने लगा तब न जाने कितने क्षेत्रो में कितनी बार पुनर्जागरण हुआ, न जाने कितने रूसो, माण्टेस्क्यू, मार्टिन लूथर, महात्मा गाँधी, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, नेल्सन मण्डेला जैसे शल्य चिकित्सकों तथा न जाने फ्रांस की क्रांतियो, अमेरिकी क्रांतियो, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम, अरब स्प्रिंग जैसे कितनें शल्य उपकरणों को प्रयोग मे लेना पड़ा। इस प्रकार मध्यकालीन युग के टूटे हुए इंसान की मरम्मत करके आधुनिक युग मे लाना अत्यधिक परिश्रमपूर्ण कार्य रहा है।

वहीं दूसरी ओर सलमान रूश्दी की 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि पुस्तक के अनुसार नवजन्मा भारत को उदाहरण के रूप मे देखे तो देखने को मिलता है कि जिस भारत का जन्म साम्प्रदायिक दंगो, गरीबी, असुरक्षित वातावरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मे हुआ था वह महज 75 वर्षों में विश्व की तिसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, चाँद तक पहुंचने मे सक्षमता तथा मंगल तक जाने की राह को प्राप्त करने वाला बन गया। इस प्रकार नवजन्मा भारत ~~जिस~~ प्रकार आजादी से अमृतकाल पहुँचा ~~मक~~ है वह समय एक टूटे इंसान की मरम्मत करने की तुलना में काफी कम तथा काफी आसान रहा है।

इसी प्रकार का एक ~~उदाहरण~~ उदाहरण पर्यावरणिक दृष्टिकोण से देखने को मिलता है तथा एक दुखद भविष्य की ओर इशारा करता है। महात्मा गाँधी जी का कहना है कि - "प्रकृति मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पर्याप्त है लेकिन लालस की पूर्ति करना असंभव है।" लेकिन मनुष्य अपने व प्रकृति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के मध्य बनने वाले सहजीवी संबंधो को भूल गया है तथा निरंतर आर्थिक उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। 17वी शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के पश्चात से 1.5°C ताप में वृद्धि हो गई है जिसके स्पष्ट परिणाम इस दशक में जैसे 2016 वर्ष अत्यधिक गर्म, वर्षण अनियमितता, नौतपा, अलनीनो-लानीनो की तीव्रता, हिमनद का पिघलना इत्यादी रूप मे दिखता है। इन्ही तत्वो के कारण मनुष्य प्रकृति व समाज से टूटने लग गया है। जिसका भयंकर परिणाम आगामी वर्षो मे देखने को मिलेगा। हालांकि इसके मरम्मत करने के अनेक प्रयास; जैसे - यू.एन.एफ.सी.सी., यू.एन.ई.पी. जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन तथा बॉम्बे नेचुरल हिस्टोरिका सोसायटी, इमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे राष्ट्रीय संगठन कार्य कर रहे है लेकिन इनके परिणाम स्पष्ट करते है कि टूटे पर्यावरण को सही करने के लिए कितनी मरम्मत करनी पड़ती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वहीं दूसरी ओर अभी भी एक संभावना है कि जिस समुदायिक भागीदारी रूपी नव सिद्धांत का जन्म हुआ है उसको सरक्षण देकर जल्द ही मजबूत पर्यावरण नामक बच्चा बनाया जा सकता है।

यदि दूसरे भाग के देखा जाए तो एक प्रश्न प्रमुखतः उठता है कि मजबूत बच्चे बनाना आसान क्यों है? तो इसका प्रथम कारण यही मिलता है कि वे पूर्णतः रिक्त होते है उन्हे जिस प्रकार का तैयार किया जाना चाहिए उन्हे उसी रूप में तैयार किया जा सकता है। यही कारण है कि प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों पर माता-पिता व परिवार का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इसका स्पष्ट उदाहरण देखने को मिलता है कि गरीबी व शरणार्थी क्षेत्रों मे जन्मे बच्चों के जीवन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में अश्लील भाषा, शराब, कटु शब्द तथा व्यभिचारी प्रवृत्ति का स्वत: विकास हो जाता है वहीं दूसरी ओर अच्छे परिवारों मे माँ को देखकर भगवान के आगे सिर झुकाना, बड़े भाई-बहनों के देखकर आतिथ्य प्रणाम करना इत्यादी सीखते है।

इसका दूसरा मुख्य कारण अग्रसक्रियता माना जाता है। बच्चो मे एक नवउत्साह होता है जिससे वे किसी कला, ज्ञान, विज्ञान, व्यवहार के प्रति आकर्षित होते है तथा सीखने के लिए लालायित होते है। यही कारण है कि व्यक्ति कुछ चीजों को जल्दी से सीख पाता है तथा आकर्षण की इस प्रवृति का विकास बचपन मे ही होता हैं। इन्ही पंक्तियों को राजस्थानी साहित्य - " बारह मे न आई बुद्धि, तेरह मे न आई कला " तो जीवन व्यर्थ मानता है। इस प्रकार बारह वर्ष मे बौद्धिक चेतना तथा तेरह वर्ष कला चेतना विकसित होने का उचित समय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

तीसरा प्रमुख कारण बचपन में न्यूनतम मनोविकास की अवस्था है जिस कारण एक बेहतर प्रशिक्षक के प्रशिक्षण द्वारा जो वस्तु या ज्ञान सीखाना चाहते है वह आसानी से सीखाया जा सकता है। डेनियल गोलमेन की पुस्तक what is ethics भी 18 से 21 वर्ष को भावनात्मक बुद्धिमता के विकास का सही समय मानती है।

इसी प्रकार नकारात्मक मनोवृति से परिपूर्णता, उठने की भावना न होना, घबराहट, पुन: असफल होने का भय इत्यादी तत्व है जो टूटे हुए इंसान की मरम्मत करने मे बाधा उत्पन करते है तथा प्रशिक्षण के इस कार्य को जटिल बनाते है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

लेकिन इसका तात्पर्य यह कदापि नही है कि टूटे इंसान की मरम्मत नही कि जा सकती है। इतिहास इसका प्रत्यक्ष साक्षी रहा है कि जब-जब इन टूटे इंसानो की मरम्मत की गई है तब से यह अत्यधिक निखर कर आए है। जैसे जो जिस यूरोप के लोगो को जो राजतंत्र की शल्य चिकित्सा से टूटे थे आज वे यूरोपीय लोकतंत्र के प्रतिनिधि बने हुए है तथा ~~तक~~ तकनीक व विज्ञान मे अग्रणी बने हुए है।

इसी प्रकार का एक घरेलू उदाहरण 1991ई के समय का है जब भारत विदेशी मुद्रा भण्डार की कमी के कारण BOP संकट का सामना कर रहा था। लेकिन 1991ई. मे उदारीकरण - निजीकरण - वैश्वीकरण नामक छप्पर लगाकर मरम्मत की गई थी उसका ही यह

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

परिणाम रहा कि भारत 2000 ई. से 2010 ई. तक निरंतर दो अंकीय वृद्धि दर दर्ज करने मे सफल रहा तथा वर्तमान में $600 बिलयन डॉलर से अधिक विदेशी मुद्रा भण्डार सुरक्षित रखता है।

अतः निष्कर्षतः यही कहा जाना उचित है कि नवजात समस्या / मनुष्य का समाधान करना अथवा उसे सीखाना व मजबूत बनाना आसान है तथा टूटे हुए इंसानो की मरम्मत करना अपेक्षाकृत मुश्किल है लेकिन यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बेहतर प्रशिक्षण, प्रभावी अनुनयन तथा भूमिका परिवर्तन, साहित्यिक व मौखिक अभिप्रेरणा के माध्यम से टूटे इंसान की अभिवृत्ति मे परिवर्तन करके उसे पुनः अभ्यासजन्य, कला के प्रति आकर्षित तथा सीखने व ज्ञानार्जन के प्रति आतुर बनाया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जा सकता है। जिससे इन इंसानो की मरम्मत करना आसान बना देता है। तथा ये इंसान ~~नए~~ नए मजबूत इंसानो की तुलना मे अधिक मजबूत बनने मे भी सक्षम तथा अधिक संभावनाशील है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Topic: "अपनी आंतरिक मान्यताओं और अपने सार्वजनिक व्यक्तित्व के बीच असमानता को समाप्त करना ही प्रामाणिकता का सार है।"

Ans

1920ई - 1921ई के समय असहयोग आंदोलन अपनी चरम स्थिति पर था। तथा अनेक नेताओ को यह लगने लग गया था कि जल्द ही उत्तरदायी शासन की स्थापना होने वाली है लेकिन 5-फरवरी-1922 की वह चौरा-चौरी काण्ड इस तरह आंदोलन को प्रभावित कर देगा किसी ने नही सोचा था। इस घटना में विरोधियों/प्रदर्शनकारियों द्वारा हिंसा का प्रयोग करना महात्मा गांधी जी कि आंतरिक मान्यताओ (अहिंसावाद) तथा सार्वजनिक व्यक्तित्व के बीच टकराव उत्पन्न होना था। इस कारण शीघ्र ही आंदोलन को स्थगित करके अपनी प्रमाणिकता का सार बनाए रखा।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार गाँधी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि एक तो हिंसा बुराई है और इसका प्रयोग भारत की स्वतंत्रता के लिए करना उससे भी बड़ा कलंक है। गाँधी जी का यही आचरण उनकी प्रमाणिकता को बनाए रखता है जो इन्हे स्वतंत्र भारत में राष्ट्रपिता की सत्ता प्रदान करता है।

यहाँ पर आंतरिक व्यक्तित्व का तात्पर्य उन नियमों, मूल्यों, सिद्धान्तों से है जिनका पालन व्यक्तिगत जीवन मे करते है तथा आपके साथ किए गए व्यवहार का मूल्यांकन भी इन्ही नियमों के अनुरूप किया जाता है। जबकि सार्वजनिक व्यक्तित्व एक विस्तृत व व्यापक अवधारणा है जो जीवन के बाहरी भाग तथा व्यवहार के मूल्यांकन मे सहायक होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इन्ही दोनो तत्वों मे समानता होना प्रमाणिकता का सार है। जिस प्रकार महात्मा गाँधी जी ने अहिंसा के लिए बाह्य व आंतरिक व्यक्तित्व मे समानता रखी वही नेल्सन मण्डेला जी ने रंगभेद के प्रति समानता बनाए रखी। इसी कारण इन दोनो ने अलग-2 राष्ट्रों मे अपनी प्रामाणिकता को बनाए रखा।

ऐसी ही एक व्याख्या चेस्टर बर्नार्ड अपनी पुस्तक "New edition of Leadership-1938" मे लिखते है कि "नेता वही है जो स्वयं राह जानता हो तथा अधीनस्थों को स्वेच्छा से कार्य करने के लिए प्रेरित करें" लेकिन इस प्रकार कि नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए प्रामाणिकता की अनिवार्यता होगी तथा यह प्रमाणिकता व्यक्तित्व में समानता उत्पन करके ही की ~~जा~~ (लायी जा) सकती है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार अब सबसे प्रमुख प्रश्न है कि यह समानता कैसे लाई जा सकती है? तो इसका प्रथम उत्तर तो श्रीमद् भगवद्गीता का निष्काम कर्म सिद्धान्त देता है कि व्यक्ति को परिणाम निरपेक्ष रहते हुए तथा फल की सेवा किए बिना कार्य किए जाना चाहिए। इस प्रकार जब व्यक्ति निस्वार्थ भाव से सेवा करेगा तो निश्चित रूप से नैतिक पाखण्ड की प्रवृति कम होगी।

इसका दूसरा उत्तर महात्मा गाँधी जी तथा वैष्णव सम्प्रदाय - "वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाने रे" के रूप में देते हैं। जिनका मानना है कि दूसरो के कष्टों को समझो तथा उनको अपने अंदर महसूस करो। अब आप जिस प्रकार का उपचार स्वयं के लिए करते हो उसी प्रकार का उपचार दूसरे लोगों के लिए करो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसका तीसरा व एक भिन्न अर्थ इमैनुएल कांट देते हैं कि "स्वयं को साध्य के राज्य का विधायक मानते हुए" निरपेक्ष आदेशों का निर्माण करो तथा कालांतर में प्रत्येक स्थिति चाहे आंतरिक हो या सार्वजनिक प्रत्येक स्थिति में इन निरपेक्ष ~~आद~~ आदेशों का पालन करते हुए अपनी प्रामाणिकता को बनाए रखा जा सकता है।

इसके अलावा अन्य व्यवहारिक क्रियाएं हैं जिससे इस असमानता को समाप्त किया जा सकता है जिसमें साहित्य का अध्ययन, महापुरुषों की जीवनी, अपने सीनियर अधिकारियों के पूर्वोदाहरणों का अध्ययन, नियमित अभ्यास, योग तथा नैतिक प्रशिक्षण की नियमित प्राप्ति इत्यादि शामिल है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार यदि इनका नियमित अभ्यास करके आंतरिक व सार्वजनिक व्यक्तित्व मे असमानता को कम किया जाए तो यह आंतरिक एवं सार्वजनिक दोनो रूप में लाभकारी सिद्ध होती है।

आंतरिक व्यक्तित्व के लिए यह समानता एक मनोवैज्ञानिक शांति को उत्पन करेगा। जिसके कारण उच्च रक्त दाब, उच्च तनाव, तथा नकारात्मक आवेगो जैसे ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, हिंसा, लोभ, घमंड इत्यादी प्रवृतियों को रोकेगा तथा जीववैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी लाभकारी होगा।

इसका एक ओर लाभ नैतिक पाखण्डी प्रवृति को रोकने तथा नैतिक द्वन्द्व जैसी समस्याओं की उत्पत्ति होने से रोकने में सहायक होगा। यही कारण रहा है कि महात्मा बुद्ध जैसे व्यक्तित्व ने तपस्या के द्वारा जब अपनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आंतरिक व बाह्य व्यक्तित्व को भेद दिया तब उनमें वैचारिक अथवा नैतिक द्वन्द्व जैसी समस्याओं की उत्पत्ति नही हुई तथा अपने ही परिवार को संघ में शामिल करने, बौद्ध भिक्षु बनने में किसी प्रकार का टकराव उत्पन नही हुआ।

तीसरा व सबसे प्रमुख लाभ यह है कि व्यक्तित्व की एकता व्यक्ति में अन्य गुणों जैसे क्षम्यता, दया, दान, शुचिता, करुणा, समानुभूति इत्यादी को उत्पन करती है तथा उन्हे पनपने का समान अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार व्यक्तित्व की एकता स्वयं के लिए लाभकारी है।

हालांकि व्यक्तित्व की एकता न केवल आंतरिक जीवन के लिए बल्कि सार्वजनिक जीवन के लिए भी लाभकारी है। जॉन सी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मैक्सवेल ने "नेता वह है जिसे राह पता हो तथा वह अन्य को राह दिखाता हो" के रूप में नेतृत्व व्यक्तित्व को परिभाषित किया है। इस प्रकार के नेतृत्व के लिए प्रामाणिकता अनिवार्य है जो कि व्यक्तित्व की एकता से ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार मैक्स वेबर ने तो इस प्रमाणिकता के सत्ता व शक्ति के वर्गीकरण में एक महत्वपूर्ण सत्ता का प्रकार बताया है। जिसमें सत्ता का आधार समर्थन होता है और यह समर्थन नागरिकों द्वारा आपके व्यवहार व विचारों के प्रति झुकाव व सहमति जन्यता के आधार पर प्राप्त होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व की एकता प्रमाणिकता को उत्पन्न करती है जो सार्वजनिक जीवन में नेतृत्व तथा सत्ता प्रदत्त करवाते है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार असमानता की उपस्थिति व्यक्ति के जीवन में आंतरिक द्वेष, नैतिक पाखण्डपन, मनोवृतियों मे टकराव तथा अंतर्मन का दमन करके स्वयं को कमजोर करती है तथा बाह्य जीवन में कथनी और करनी मे अंतर सामाजिक स्वीकार्यता को कम करने, सम्मान मे कमी करने तथा निष्क्रिय सामाजिक घटक बनाकर व्यक्ति का सामाजिक हाँशियाकरण (बहिष्करण/अलगाव) कर देता है जिससे व्यक्ति अपने जीवन की प्रामाणिकता को खो देता है जिसकी अभिव्यक्ति भारतीय समाज में "ये तो ऐसा ही है" "ये फालतू है" "अभी सिर खाएगा" "आप मतलबी इंसान" अथवा "इसके खाने के दाँत अलग व दिखाने के दाँत अलग है" इत्यादी रूप में देखने को मिलती है।

इसलिए निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आंतरिक व्यक्तित्व तथा सार्वजनिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यक्तित्व में के बीच असमानता को समाप्त करना तथा समाप्त की प्राप्ति करना व्यक्ति के जीवन को प्रामाणिकता प्रदान करता है तथा यही प्रामाणिकता उसके जीवन को सक्रिय बने रहने की ऊर्जा, सामाजिक स्वीकार्यता तथा नेतृत्व क्षमता व सत्ता प्रदान करवाने मे सहायक होती है।

समाप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"गाँधी story" (देश की स्वतंत्रता और चौरा-चौरी काण्ड" कराई प्रमाणिकता)

समाज कैसे

1. समाज कैसे हो।
2. क्यो हो।
3. कैसे — क्यों, कैसे
4. नहीं हो तब नुकसान
5. होने के फायदे क्या है।

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. "प्रामाणिकता का सार" — कैसे है।

आन्तरिक मान्यताएं — सार्वजनिक व्यक्तित्व — प्रमाणिकता

- John. Sea. maxwell — नैतिक पाखण्ड — नेता के लिए — सामान्य व्यक्ति — आंतरिक / बाहरी
- गीता
- # New edition of Leadership 1938 — चेस्टर बर्नार्ड
- अर्थशास्त्र चाणक्य — आँखें — रामा- यथा राजा तथा प्रजा

कैसे लाएं — साहित्य, अभ्यास, निस्वार्थता, नैतिक नियमावली का पालन

कांट — निरपेक्ष आदेश

एड वैचारिक

गीता — निस्वार्थ कर्म

क्यों जरूरी — मैक्स वेबर — सत्ता — वैधानिक — शक्ति — समर्थन

"प्रमाणिकता का सार"

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SPACE FOR ROUGH WORK

मैक्सवेबर जैसे विचारकों ने 5
शक्ति
सत्ता कार्य

स्वयं नीति बनाए
राह पता हो

अधीनस्थो को स्वेच्छा से कार्य करने के लिए प्रेरित करे।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

* वली कहे तू अगर एक पचल
रसिको के दिल मे कटारी लगे।

(1) ... तीर जब करी लगे।
उसे कैसे न दुनिया भारी लगे।

(2) ... के दिल में प्यारी लगे।

(1) (22) इंसान को मरम्मत

Learning poverty

नए का निर्माण आसान

"चाणक्य" → वैधानिक / सत्ता

SPACE FOR ROUGH WORK

Poverty

Pirsnmy imp public

(1) मुश्किल क्यों

(2) कैसे

ऐसा नही की संभव नहीं है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राजतंत्र प्रति
- Polity.
- History → वा. kalidas
- Art
- FR

टूटा इंसान क्यों समय लेता है -
1. नकारात्मक मनोवृति
2. उठना नही चाहता
3. घबराहट, असफलता से भय
4. आधुनिक प्रशिक्षण / कौशल को भय
5.

* max weber

जानरी / जानकारी
- Economics - 1991 - टूटे को बनाने
- Enviornment
- Society

- जिनो
- थानडाइक
- कोलबर्ग
- सेलावी-मेयर

What is ethics

नया जल्दी मरम्मत
- सिखने की ललक
- अग्र सक्रियता
- जैसा चाहे वैसा निर्माण
- पुर्वाग्रह से रहित

दूसरा

कैसे की जा सकती है

Ex. - राजतंत्र - लोकतंत्र की स्थापना - यूरोप

- B&O
- Health - B.P. बैलेन्स
- तनाव, Psychological
- tension

public

Copyright – Drishti The Vision Foundation